15

परिचय

(1 शमूएल 16)

मई 12, 1974 की रविवार सुबह की बात है, मैं ज़्लोरेंस, इटली में प्रभु की कलीसिया के साथ परिवार सहित आराधना के लिए गया था। आराधना खत्म होते ही, ज़्लोरेंस का एक प्रचारक अरल एडवर्ड्स हमें अपनी कार के पास ले गया। गाड़ी पूरी गति से भगाते हुए उसने हमें बताया, ''अजायब घर दो बजे बन्द हो जाता है, सोमवार को खुलता नहीं और मंगलवार को आप यहां होंगे नहीं!'' परमेश्वर के अनुग्रह से हम सकुशल गलेरिया डैल अकेडमिया में पहुंच गए।

अन्दर जाकर हमने मिचलेंजलो की बनाई अधूरी मूर्तियां देखीं, जो चट्टान पर आकृतियां बनाने की प्रक्रिया से मुझे हैरान करने वाली थीं। फिर हम एक बहुत बड़े कमरे में गए। वहां हमारे सामने *दाऊद* की चौदह फुट की विशाल प्रतिमा लगी हुई थी जो मिचलेंजलो की बेहतरीन कारीगरी का नमूना है।

यह मूर्ति अपने शत्रुओं के सामने खड़े युवक दाऊद की है। अपने विरोधी पर उसकी भौहें चढ़ी हुई हैं और आंखें घूर रही हैं। उसका शरीर तनावरहित परन्तु कसा हुआ है और लड़ने को तैयार लगता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जीत उसी की होगी। मूर्तिकार की निपुणता इतनी थी कि ऐसा लगता है जैसे उस मूर्ति की छाती अभी फूल जाएगी और होंठों से विश्वास के ये शब्द निकल आएंगे: ''तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं ... संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुझ्हें हमारे हाथ में कर देगा'' (1 शमूएल 17:45, 47)। अरल एडवर्ड्स हमें अजायब घर में इसलिए ले गया ज़्योंकि उसे मालूम था कि *दाऊद* को देखे बिना ज़्लोरेंस की यात्रा अधूरी है।

परन्तु इस मूर्ति की तरह ही यह विषय भी शानदार है कि दाऊद इतना महत्वपूर्ण है कि उसके जीवन की कहानी बताने के लिए पुराने नियम के छियासठ अध्याय लगते हैं, जिसका उल्लेख नये नियम में उनसठ बार आता है, और बाइबल में वही एकमात्र ऐसा व्यज़्ति है जिसे ''परमेश्वर के मन के अनुसार'' कहा गया है।

1 शमूएल 13:14 में, शाऊल के राजा के रूप में नकारे जाने के बाद, शमूएल ने कहा, ''परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिए एक ऐसे पुरुष को ढूंढ़ लिया है जो *उसके मन के अनुसार* है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया

है, ज़्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।'' प्रेरितों 13 अध्याय में, पिसिदिया के अन्ताकिया के आराधनालय में सज़्बोधन करते हुए, पौलुस ने शाऊल के विषय में बताते हुए कहा, ''फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिस के विषय में उस ने गवाही दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे *मन के अनुसार* मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा'' (प्रेरितों 13:22)।

दाऊद के जीवन से सज़्बन्धित सभी अध्याय *इतिहास* पर उतना नहीं जितना उसके *मन* पर ध्यान दिलाते हैं।

''परमेश्वर के मन के अनुसार'' होने का ज़्या अर्थ है? ज़्या इस शज़्द का अर्थ पूर्णता या सिद्धता पाना है? शायद हां। दाऊद किसी अजायब घर में रखा हुआ संगमरमर का संत नहीं था। उसकी नसों में गर्म खून दौड़ता था और उसके शरीर में गहरी भावनाएं थीं। दाऊद हम में से अधिकतर लोगों में से अधिक ऊपर उड़ा होगा, वह टूटा भी बड़ी बुरी तरह था।

इस शज़्द का अर्थ है कि किसी का मन परमेश्वर के मन के साथ मेल खाता है। आज हम इस अभिव्यज़्ति का इस्तेमाल इस तरह करते हैं: ''उसने मेरे मन की बात कह दी।'' हमारे कहने का अर्थ होता है कि ''फलां व्यज़्ति की सोच मेरी सोच से मिलती-जुलती है।'' हमारे मन की कोई बात ऐसी होती है जिस पर हम दोनों एक मत होते हैं।

दाऊद के जीवन की समीक्षा करते हुए हम उसके अच्छे और बुरे दिनों का अध्ययन करेंगे अर्थात हम उसके जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों को देखेंगे। दाऊद खुशहाली में हो या तंगी में, उसकी निष्ठा परमेश्वर में कभी कम नहीं हुई। यद्यपि जीवन के तूफ़ानों से आत्मिक कज़्पास कभी-कभी डोल जाता था, परन्तु तूफ़ान के थम जाने पर दाऊद का कज़्पास फिर से अपने आत्मिक ध्रुव अर्थात परमेश्वर की ओर आ जाता था।

''परमेश्वर के मन के अनुसार'' बनने के लिए ज़्या किया जा सकता है? ज़्या दाऊद तीस या चालीस वर्ष की आयु में किसी सुबह उठकर ''परमेश्वर के मन के अनुसार'' बन गया था? नहीं, वह तो परमेश्वर के मन के अनुसार इसलिए था ज़्योंकि *लड़कपन* से ही वह परमेश्वर के मन के अनुसार था। दाऊद ने अपने मन को परमेश्वर के मन के अनुसार बनाना राजा बनने से कई वर्ष पहले शुरू कर दिया था।

शमूएल के यह कहने के समय कि ''यहोवा ने अपने लिए एक ऐसे पुरुष को ढूंढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है'' (1 शमूएल 13:14), शाऊल ने अभी राज्य करना आरज़्भ ही किया था। दाऊद का अभी जन्म भी नहीं हुआ होगा, या यदि हुआ भी हो तो वह बहुत छोटा होगा।[1] कई साल बाद, शाऊल के राजा होने की बात रद्द करते हुए शमूएल ने कहा था, ''आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है'' (1 शमूएल 15:28)। ''तेरे पड़ोसी'' का इशारा दाऊद की ओर था (1 शमूएल 28:17), परन्तु दाऊद अभी वयस्क नहीं हुआ था। वह एक लड़का ही था जो अपने पिता की भेड़ें चराता था। परन्तु उसमें वे गुण आने शुरू हो गए थे जिनसे उसे परमेश्वर के वचन में सबसे महत्वपूर्ण लोगों में स्थान मिला।

दाऊद पर अध्ययन आरज़्भ करते हुए आइए देखते हैं कि वह ''परमेश्वर के मन के अनुसार'' कैसे बना।

एक पुत्र जिसने चलना सीखा

दाऊद का जन्म यहूदा के गोत्र में हुआ था। पुरखाओं द्वारा दी जाने वाली याकूब की (उत्पत्ति 49:8-12) आशीष में यहूदा को राजसी गोत्र के रूप में दिखाया गया था परन्तु अभी तक इस गोत्र ने अपने आप को अलग करने के लिए कुछ विशेष नहीं किया था।

दाऊद की अधिकतर पृष्ठभूमि रूत की संक्षिप्त सी खूबसूरत पुस्तक में मिलती है। रूत एक मोआबिन थी जो अपने पति की मृत्यु के बाद सास, नाओमी के साथ यहूदा में आ गई थी। यह पुस्तक रूत और बोअज़ के मिलन की कहानी बताती है। रूत और बोअज़ के विवाह के बाद उनके घर एक बेटा पैदा हुआ। स्त्रियों के वहां इकट्ठा होने पर, नाओमी ने उस बच्चे को अपनी गोद में लिया। ''और उसकी पड़ोसिनों ने यह कहकर, कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के का नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ'' (रूत 4:17)। दाऊद की शेष वंशावली अगली पांच आयतों (रूत 4:18-22) में दी गई है जो यहूदा के पुत्र पेरेस तक पिछली दस पीढ़ियों के बारे में बताती है।[2]

रूत और बोअज़ वर्तमान यरूशलेम के दक्षिण पश्चिम की ओर पांच-छह मील दूर एक गुमनाम गांव में रहते थे (रूत 1:2, 19, 22; 2:4; 4:11)। यहीं पर उनका बेटा ओबेद और उसका पोता यिशै रहते थे। उनके पड़पोते दाऊद का जन्म भी यहीं हुआ था।[3]

दाऊद दस बच्चों, जिनमें आठ लड़के और दो लड़कियां थीं, में सबसे छोटा था।[4] आम तौर पर सबसे छोटा बच्चा सबसे प्रिय होता है, परन्तु दाऊद के साथ ऐसा कुछ भी नहीं था। उन्होंने उसका नाम ''दाऊद''[5] रखा था जिसका अर्थ है ''प्रिय,'' परन्तु प्रारज़्भ में इसके उलट ही लगता है। एक बालक के रूप में परिवार के दूसरे लोग दाऊद को ज्यादा महत्व नहीं देते थे (1 शमूएल 16:11)। कई लोग तो साफ़ तौर पर उसे पसन्द ही नहीं करते थे (1 शमूएल 17:28)।

उसका परिवार निर्धन था।[6] बोअज़ के बहुत से सेवक थे परन्तु यिशै के समय यह परिवार कठिन दौर से गुज़र रहा था। ''झंडे के पोल को थामने'' वाले आदमी की तरह दाऊद को घटिया सा, परन्तु कठिन काम दिया गया था जो साधारणतया नौकर करते थे।[7]

एक निर्धन परिवार के लिए छोटे से गांव में दाऊद का कोई महत्व नहीं था, उसे उसके भाइयों द्वारा पसन्द नहीं किया जाता था। उसका मज़ाक उड़ाया जाता था, और उसे ऐसा काम दिया गया था जिसे कोई दूसरा करने को तैयार नहीं था। उसके लिए चिड़चिड़ा होना कितना आसान था! दाऊद अपने आज्ञा न मानने का आरोप आसानी से परमेश्वर पर, अपने परिवार पर तथा समाज पर आरोप लगाकर विद्रोही हो सकता था! परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत, एक लड़के के रूप में दाऊद ने परमेश्वर के साथ रोज़ चलना आरज़्भ किया।

दो दिन पहले ही मुझे पता चला है कि रोमानिया में रहने वाली मेरी नातिन, रेचल

अभी-अभी चलने लगी है। (मेरी बेटी बताती है कि रेचल बड़ों के जूते डालकर घूमती रहती है!) किसी भी बच्चे के जीवन में चलना सीखना बहुत ही रोमांचकारी आधार है। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर के मार्ग में चलना सीखना है। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है: ''मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैंने तेरे कितने लड़के बालों को उस आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी सत्य पर चलते हुए पाया'' (3 यूहन्ना 4)।

बचपन में ही परमेश्वर को अपना जीवन समर्पित कर देने के लिए दाऊद किस बात से प्रभावित हुआ, हमें नहीं मालूम। यहूदी लड़कों के लिए व्यवस्था की शिक्षा लेना एक रीति थी। इसके अलावा, परिवार के इकट्ठा होने पर, दाऊद इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश में लाने के समय परमेश्वर की उन अद्‌भुत कहानियों को सुनता होगा। उसने अवश्य सुना होगा कि परमेश्वर ने उसके परिवार अर्थात रूत और बोअज़, ओबेद और यिशै तथा उसकी संतान को किस प्रकार से आशीष दी थी। दाऊद द्वारा इन बातों को सुनने से परमेश्वर के वचन का बीज बंजर भूमि पर नहीं गिरता था (देखें मत्ती 13:3-9, 18-23)। बल्कि यह तो बढ़कर, प्रभु में बने रहने और स्थिर रहने वाले विश्वास में विकसित हो गया।[8]

हर मां बाप इससे एक सबक ले सकता है। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों में आत्मिक आधार को मजबूत करें। परमेश्वर की पवित्र पुस्तक के लिए प्रेम तथा उसके ज्ञान को अपने बच्चों में डालने के लिए छोटी से छोटी उम्र भी बहुत महत्वपूर्ण है (नीतिवचन 22:6; इफिसियों 6:4; आदि)।

हम सब भी इससे सबक ले सकते हैं। हम में से हर कोई परमेश्वर के प्रति जवाबदेह है। परमेश्वर की आज्ञा को मानने में अपनी असफलता के लिए हम दूसरों पर या परिस्थितियों पर आरोप नहीं लगा सकते। जवान हों या बूढ़े, हम से हर एक को जितनी जल्दी हो सके परमेश्वर के सामने अपनी निजी वचनबद्धता दिखानी चाहिए। अपने प्रभु के साथ चलना सीखने के लिए समय तो लगता है।

एक चरवाहा जिसने काम करना सीखा

दाऊद के प्रारम्भिक जीवन के बारे में हम एक तथ्य जानते हैं कि वह अपनी भेड़ों की रक्षा करता था। जब शमूएल ने यिशै से पूछा कि उसका कोई और बेटा भी है तो यिशै का उज़र था, ''लहुरा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है'' (1 शमूएल 16:11)। हम पढ़ते हैं, ''दाऊद बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़-बकरियां चराने को शाऊल के पास से आया जाया करता था'' (1 शमूएल 17:15)। दाऊद जब सेना में अपने तीन सबसे बड़े भाइयों के लिए खाना लेकर जाता है, तो उनमें से एक ने उसे क्रोधित होकर पूछा, ''तू यहां ज़्यों आया है? और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़-बकरियों को तू किस के पास छोड़ आया है?'' (1 शमूएल 17:28; भजन संहिता 78:70-72 भी देखें)।

एक चरवाहे के रूप में दाऊद के जीवन से सम्बन्धित बाइबल में कोई कहानी नहीं मिलती। परन्तु हम भजनों तथा बाइबल के अन्य पदों से, और अन्य स्रोतों से उस ''काम'' के बारे में अपनी जानकारी से दाऊद के जीवन की एक तस्वीर बनाते हैं।

चरवाही एक सज़्माननीय परन्तु बहुत ही निज़्न स्तर का काम था।

चरवाहे का जीवन एकांतवासी और अकेला होता था जिसकी साथी केवल भेड़ें ही होती थीं।[9]

चरवाहे का जीवन बड़ा जिज़्मेदारी वाला होता था। चरवाहे को यह ज्ञान होना आवश्यक था कि उसकी भेड़ें कौन सी हैं और उनकी देखभाल कैसे करनी है। उसके लिए पलिश्तीन के रास्तों का ज्ञान होना भी आवश्यक था जहां चरागाहें हों, और यह भी कि उनके लिए पानी कहां मिलेगा। भटक जाने वाली भेड़ों को ढूंढ़ना भी उसी का काम होता था। उसे कमज़ोर और बीमार भेड़ की देखभाल करना भी आवश्यक होता था। उसके लिए बच्चे वाली भेड़ों की सहायता करना और छोटे मेमनों को देखना भी आवश्यक होता था (भ.सं. 23; यूहन्ना 10:1-18; लूका 15:4-6; भ.सं. 78:71)।

चरवाहे का जीवन बड़ा कठिन होता है। आज दाऊद के अपनी भेड़ों की देखभाल करने पर ध्यान देते समय यदि आपका ध्यान विशाल नीले आसमान के नीचे हरी-हरी लहलहाती सुन्दर चरागाह पर है, तो अपना ध्यान रेगिस्तान की ओर से पूर्वी लोअ के साथ चमचमाती हुई धूप में यहूदा की ऊबड़-खाबड़ पथरीली पहाड़ियों पर लगाएं। पलिश्तीन में चरवाहे का काम कड़कती धूप में, धूल भरा और बदबूदार काम था जिसे साधारणतया कोई कारण नहीं करता था।

कई बार चरवाहे का काम बहुत जोखिम भरा भी होता था। मेरा एक मित्र जो हर जगह मोटरसाइकिल पर ही जाता है, मोटरसाइकिल चलाने को ''उकताहट के घण्टे जिसमें कभी-कभी भय से दिल डर जाता है'' कहता है![10] चरवाही के काम को भी दाऊद यही कह सकता था। उसे खतरे से भरे जंगली इलाकों में ''घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर'' (भजन संहिता 23:4) भेड़ों को ले जाना पड़ता था। उसे पड़ोसी पलिश्तीनियों के अलावा जिन्होंने उन्हें चुराने की कोशिश की थी, ज़ेड़ों को चोरों से बचाना पड़ता था (यूहन्ना 10:1)। उसे झुंड की छोटी और असहाय भेड़ों को अपना शिकार बनाने वाले जंगली जानवरों और खतरनाक पक्षियों से लड़ना पड़ता था। दाऊद ने शाऊल राजा को इन लुटेरों के बारे में बताया:

> तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियां चराता था; और जब कोई सिंह वा भालू झुंड में से मेज़्ना उठा ले गया, तब मैं ने उसका पीछा करके उसे मारा, और मेज़्ने को उसके मुंह से छुड़ाया; और जब उसने मुझ पर चढ़ाई की, तब मैं ने उसके केश को पकड़कर उसे मार डाला। तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला; ... (1 शमूएल 17:34-36)।

एक नवयुवक के रूप में किसी शेर या भालू के सामने आंखों में आंखें डालकर खड़े होने की कल्पना करें! मुझे तो पता नहीं कि मैं उस स्थिति में ज़्या करता। जब मैं भागता हूं, तो एक जगह में ही मेरा काफी समय लग जाता है, और चढ़ाई भी मुझसे नहीं चढ़ी जाती। परन्तु दाऊद ने जब वह जवान ही था, इन भयंकर जानवरों का सामना करके उन्हें मार

गिराया था! उसने उन्हें मारने के लिए कौन से हथियार इस्तेमाल किए? उसकी लाठी (एक भारी सोंटा जिसका इस्तेमाल छड़ी के रूप में भी किया जा सकता था) और गोफन (भ.सं. 23:4; 1 शमूएल 17:40) और परमेश्वर में उसका विश्वास। उसने कहा कि "यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है" (1 शमूएल 17:37)।

जब परमेश्वर किसी को अपने लोगों की अगुआई करने वाले के रूप में देखता, तो वह उसमें किसी ऐसे बिगड़ैल कृपा-पात्र को नहीं देखता जिसे सेवा करवाने की आदत हो। परमेश्वर ने ऐसे व्यक्ति को देखा जिसे मालूम था कि काम कैसे करना है, उसकी ज़िम्मेदारी ज़्या है, जो कठिनाई को सह सकता है, जिसने हर हाल में अपने काम को पूरा करने के लिए अपना ज़ोर लगा देना था। बैतलहम के बाहर एकांत चरागाहों में दाऊद ने यही बातें सीखी थीं। भेड़ों का चरवाहा बनना सीखकर दाऊद ने इस्राएल के लोगों की अगुआई करनी सीखी।

[परमेश्वर ने] अपने दास दाऊद को चुनकर
भेड़शालाओं में से ले लिया;
वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे-पीछे
फिरने से ले आया
कि वह उसकी प्रजा याकूब की
अर्थात उसके निज भाग इस्राएल की चरवाही करे।
तब उसने खरे मन से
उसकी चरवाही की,
और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुआई की
(भजन संहिता 78:70-72)।

आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता ज़िम्मेदारी की भावना का होना है। हम अपने काम में गैर ज़िम्मेदारी का व्यवहार पाते हैं। हम पड़ोसियों से गैर ज़िम्मेदाराना काम करते हैं। हम राजनीति में गैर ज़िम्मेदार हैं। पति और पत्नी के रूप में हम अपना कर्ज़व्य ज़िम्मेदारी से नहीं निभाते। यहां तक कि कलीसिया में भी हम गैर ज़िम्मेदार ही हैं।

आइए, हम सभी इन बातों को अपने जीवन में लागू करें। यदि हम गैर ज़िम्मेदार लोग रहे हैं, तो हमें चाहिए कि अपनी लापरवाही भरी आदतों को छोड़कर मन फिराएं! परमेश्वर केवल उन्हीं लोगों का इस्तेमाल कर सकता है जो अपने काम को जिम्मेदारी से स्वीकार करना जानते हैं!

यदि हम माता-पिता हैं तो अपने बच्चों को ज़िम्मेदार पुरुष या स्त्रियां बनने की शिक्षा देने से भी बढ़कर कुछ और बातें हैं। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को कुछ काम करना सिखाएं! हमें उन्हें ज़िम्मेदारी सौंपनी चाहिए (तु. 2 थिस्सलुनीकियों 3:10)! आइए हम उन्हें उन कामों के लिए जो उन्हें दिए जाते हैं, ज़िम्मेदार बनाएं! आइए हम उन्हें प्रभु के काम में इस्तेमाल होने के लिए तैयार करें!

एक राजा जिसने प्रतीक्षा करनी सीखी

अन्ततः हम 1 शमूएल 16 अध्याय को देखने के लिए तैयार हैं। 1 शमूएल में यहां तक दाऊद का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। अभी तक शाऊल नामक तड़क-भड़क वाले राजा पर ही फ़ोकस था। परन्तु शाऊल का राज्य अब पुराना हो चुका है। परमेश्वर पर निर्भर रहने के बजाय शाऊल ने अपनी समझ और सामर्थ पर भरोसा किया था। अपने शासन के आरज़्भ में, अपनी सेना के हार जाने के भय से उसने प्रज़ु की आज्ञा के अनुसार शमूएल की प्रतीक्षा करने के बजाय स्वयं ही मेल बलि चढ़ा दी थी (1 शमूएल 13:13)। बाद में परमेश्वर की आज्ञानुसार, अमालेकियों को पूरी तरह से नाश करने के बजाय उसने उनके राजा और अच्छे-अच्छे जानवरों को छोड़ दिया था (1 शमूएल 15:2, 3, 9)। तब परमेश्वर ने शाऊल को बताया, ''मैं शाऊल को राजा बनाके पछताता हूं; ज़्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया'' (1 शमूएल 15:11)। शमूएल जिसने राजा के रूप में शाऊल का अभिषेक किया था, निराश हुआ परन्तु उसने शाऊल को परमेश्वर का संदेश दिया: ''आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है'' (1 शमूएल 15:28)। पहला शमूएल 16 अध्याय अगले राजा के अभिषेक तथा बाद की घटनाओं के बारे में बताता है।

यहोवा रामा में उदास शमूएल के पास आया (1 शमूएल 15:34; 7:17)। ''मैंने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिए तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं, ज़्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिए चुना है'' (16:1)। परमेश्वर ने शमूएल को सेना के किसी सिपाही को नियुज़्त करने के लिए नहीं कहा। न दी उसने नबियों के छात्रालयों में जाकर किसी विद्वान को नियुज़्त करने के लिए कहा। उसने उसे किसी बड़े नगर में जाकर बड़े से अगुवे को नियुज़्त करने के लिए नहीं कहा। बल्कि उसने उसे एक छोटे से कस्बे में जाकर वहां के सबसे निर्धन किसानों में से एक के घर जाने को कहा।[11] परमेश्वर हमारी तरह काम नहीं करता (यशायाह 55:8, 9)।

परन्तु शमूएल शाऊल से डरता था।[12] उसने परमेश्वर से कहा, ''मैं ज़्योंकर जा सकता हूं? यदि शाऊल सुन लेगा, तो मुझे घात करेगा'' (16:2क)। यह सुनकर कि उसकी जगह कोई और राजा होगा, शाऊल अपने सिंहासन को चुनौती देने वाली किसी भी शज़्ति की खोज में था। परमेश्वर ने शमूएल को बताया, ''एक बछिया साथ ले जाकर कहना, कि मैं यहोवा के लिए यज्ञ करने को आया हूं'' (16:2ख)। ज़्या परमेश्वर ने शमूएल को झूठ बोलने के लिए कहा? नहीं, शमूएल ने बछिया ले जाकर उसे बलिदान किया (16:4, 5)। कभी-कभी हमें अपना गौण उद्देश्य प्रकट करके प्रमुख उद्देश्य को छुपाने की अनुमति होती है। यहां पर, परमेश्वर के चुने हुए शमूएल की सुरक्षा और गृहयुद्ध को रोकने के लिए भेद रखना आवश्यक था।

परमेश्वर आगे निर्देश देता रहा: ''और यज्ञ पर यिशै को न्यौता देना, तब मैं तुझे जता

दूंगा कि तुझ को ज़्या करना है; और जिसको मैं तुझे बताऊं उसी का मेरी ओर से अभिषेक करना'' (16:3)।

शमूएल ने सींग में तेल भरा और बछिया को लेकर दक्षिण में बैतलहम की ओर चल पड़ा। उसके गांव में पहुंचने पर, ''उस नगर के पुरनिये थरथराते हुए उससे मिलने को गए'' (16:4क)। शमूएल अभी भी एक न्यायी के रूप में ही काम करता था (1 शमूएल 7:15)। बैतलहम उसका क्षेत्र नहीं था (1 शमूएल 7:16), इसलिए जब इस प्रसिद्ध न्यायी ने इस छोटे से शांत गांव का अचानक दौरा किया, तो नगर के अधिकारियों के मन में सबसे पहला विचार यही आया कि किसी बैतलहम वासी ने कोई बड़ी गलती की है। इसलिए शायद अब सारे गांव को बड़ा दण्ड मिलेगा। थरथराते हुए, नगर के अगुओं ने पूछा, ''ज़्या तू मित्रभाव से आया है कि नहीं?'' (16:4ख)। शमूएल ने उज़र दिया, ''हां मित्रभाव से आया हूं; मैं यहोवा के लिए यज्ञ करने को आया हूं'' (16:5क)।

शमूएल ने अधिकारियों से अपने आप को पवित्र करके[13] बलिदान के लिए उसके पास आने को कहा (16:5ख)। बलिदान करने पर, साधारणतया पशु के चुनिन्दा अंग ही भेंट किए जाते थे; बाकी खा लिए जाते थे (1 राजा 19:21; इत्यादि)। बैतलहम में इस्राएल के इस प्रसिद्ध व्यज़्ति द्वारा दावत दी जाने वाली थी और इन महत्वपूर्ण लोगों को उसमें बुलाया गया था। इस छोटे से कस्बे में यह घटना सज़्भवत: सबसे अधिक रोमांचकारी रही होगी।

शमूएल ने उन्हें यिशै और उसके पुत्रों को भी बुलाने के लिए कहा (16:5ग)।[14] निमन्त्रण पाकर यिशै के आश्चर्य और आनन्द की कल्पना करें! उसका दादा, बोअज़ उस समाज के अति सज़्मानित लोगों में से एक था। शायद इतिहास फिर से अपने आप को दोहरा रहा था। यिशै और उसके लड़के (हां, उसके अधिकतर लड़के) नहाकर ''चर्च जाने वाले कपड़े'' पहनते हैं, और जश्न के लिए निकल पड़ते हैं।

जब वे उस जगह में जा रहे थे जहां दावत होनी थी, तो शमूएल ने यिशै के सबसे बड़े बेटे एलीआब को देखा।[15] वह काफी लज़्बा और सुशील था[16]; *देखने में* वह एक राजा की तरह लगता था। शमूएल ने सोचा, ''कि निश्चय जो यहोवा के साज़्हने है वही उसका अभिषिज़्त होगा'' (16:6)।

अब हम 1 शमूएल की सबसे महत्वपूर्ण आयत में आते हैं: ''परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, ज़्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; ज़्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है'' (16:7)। ''रूप'' शज़्द का अनुवाद ''आंखों'' के लिए इब्रानी भाषा से लिया गया है, जो सांकेतिक रूप में मुंह को कहने का ढंग है।

यह उस समय भी सत्य था और आज भी सत्य है कि लोग मुंह देखकर न्याय करते हैं। हमें अपने प्रचारकों को प्रचारकों के रूप में देखना ही अच्छा लगता है (मेरी पत्नी अभी भी मुझे सुधारने में लगी हुई है)। हम अपने गोल कीपरों (फुटबॉल में) को गोल कीपरों के रूप में ही देखना चाहते हैं। हम अपने प्रधानमंत्री को प्रधानमंत्री ही देखना चाहते हैं। हमारी

नज़र में व्यज़्ति से उसकी पैकिंग अधिक महत्वपूर्ण होती है।

लेकिन, कितनी ही बार हम निराश हुए हैं ज़्योंकि लोगों का जीवन उन्हें मिलने वाली प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं होता? कितने ही युवकों को यह जानकर निराशा होती है कि सुन्दर चेहरा एक अच्छी पत्नी होने की गारन्टी नहीं होता। कितनी ही युवतियां सुन्दर दिखने वाले किसी पुरुष पर मोहित होकर धोखा खाती हैं।

परमेश्वर ऊपरी, अर्थात बाहरी दिखावे के आधार पर फैसला नहीं करता। बल्कि वह तो मन को देखता है (नोट 1 राजा 8:39; 1 इतिहास 28:9; लूका 16:15)। किसी ने कहा है, ''जज अपने जज को सिखा रहा था कि न्याय कैसे करना है।''[17] परमेश्वर ने भी *हमें* न्याय करना सिखाना था। यीशु ने कहा, ''मुंह देखकर न्याय न चुकाओ, परन्तु ठीक-ठीक न्याय चुकाओ'' (यूहन्ना 7:24)।[18]

यिशै ने अपने दूसरे बेटे, अबीनादाब को बुलाया, इसमें कोई संदेह नहीं कि वह भी एक छैल-छबीला नौजवान था। शमूएल को सिर हिलाकर कहना पड़ा, ''यहोवा ने इसको भी नहीं चुना'' (16:8)। फिर तीसरे बेटे, शज़्मा की बारी आई। उसे भी वही जवाब मिला: ''यहोवा ने इसको भी नहीं चुना'' (16:9)। एक-एक करके नतनेल ... रद्दै ... ओसेम (1 इतिहास 2:14, 15) ... शमूएल के सामने यिशै के सातों बेटों को लाया गया-सभी लड़के सुन्दर, और राजा बनने के योग्य लगते थे, परन्तु सार यह था कि ''यहोवा ने इन्हें नहीं चुना'' (16:10)।

शमूएल परेशान था। परमेश्वर ने कहा था कि उसने यिशै के पुत्रों में से एक को राजा होने के लिए चुना है (16:1) और यिशै के सभी पुत्रों को दावत में बुलाया जा चुका था। शमूएल ने यिशै से पूछा, ''ज़्या *सब* लड़के आ गए?'' (16:11क)। यिशै ने दुखी होकर उज़र दिया होगा, ''लहुरा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है'' (16:11ख)। इब्रानी विद्वानों का कहना है कि ''लहुरा'' शज़्द सबसे छोटे के लिए नहीं बल्कि पद में सबसे निज़्न दर्जे वाले के लिए इस्तेमाल किया गया था।

उस दावत में दाऊद को ज़्यों नहीं बुलाया गया था। तर्क दिया जा सकता है कि भेड़ों की देखभाल के लिए किसी को रखना आसान नहीं होगा, परन्तु इस विशेष अवसर के लिए किसी को रखा भी जा सकता था (नोट 1 शमूएल 17:20)। जब *सब* पुत्रों को बुलाया गया था तो यिशै दाऊद को ज़्यों नहीं लेकर आया था?[19]

शायद इसलिए कि दाऊद उनसे अलग था। उससे ''लाली'' झलकने की बात कही गई है (16:12)। ''लाली'' ''लाल'' के लिए इब्रानी शज़्द से लिया गया है; यह वही शज़्द है जिसका इस्तेमाल एसाव के लिए किया गया, जिसके शरीर पर लाल रोएं थे (उत्पज़ि 25:25)। स्पष्टतया दाऊद की शारीरिक बनावट में उसके पूर्वजों के कुछ विदेशी जीन भी थे।[20] ''लाली झलकने'' की बात का अर्थ हो सकता है कि इतना ही हो कि दाऊद का रंग गोरा था या उसका सिर लाल और चेहरे पर दाग थे। दोनों ही अर्थों में दाऊद का रंग रूप आम यहूदी जैसा नहीं था।

दाऊद न केवल अलग दिखता था बल्कि वह काम भी अलग ही करता था। वह किसी

वास्तविक आदमी की तरह काम नहीं करता था। वह कविता लिखता और वीणा बजाता था।[21] ये दोनों ही काम एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं।

जब मैं दाऊद के बारे में सोचता हूं, तो मेरे दिमाग में उसके बारे में जो बात आती है वह है कि ''नाली का कीड़ा।'' जब किसी कुतिया के इतने बच्चे हों कि वह एक बार में सबको दूध न पिला सकती हो, तो सबसे छोटे पिल्ले को पीछे धकेल दिया जाता है। वह बड़े पिल्लों का पेट भरने के बाद बचे-खुचे दूध से ही गुज़ारा करके जीवित रहता है। आम तौर पर यह पिल्ला सबसे प्यारा और सज़्त होता है, परन्तु रहता वह ''कीड़ा'' ही है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि दाऊद को खाना और कपड़ा तो मिलता था, परन्तु अपने ही परिवार में उसे वह प्रेम, सज़्मान और प्रशंसा जो हर बच्चे के पालन-पोषण में आवश्यक है, नहीं मिली थी। दाऊद ने बाद में लिखा, ''मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सज़्भाल लेगा'' (भजन संहिता 27:10)। यदि दाऊद को यह न लगता कि उसके परिवार ने उसे छोड़ दिया है तो वह ये शज़्द ज़्यों लिखता?[22] परमेश्वर हमारी सहायता करे कि माता-पिता के रूप में हम अपने बच्चों को यह समझा सकें कि हम उनसे प्रेम करते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं, और किसी प्रकार के पक्षपात से बचाए!

हम यिशै द्वारा दाऊद को दावत में न बुलाने का ठीक-ठीक कारण तो नहीं जानते,[23] परन्तु एक बात साफ है कि यिशै अपने बड़े लड़कों जितना महत्व सबसे छोटे लड़के को नहीं देता था। दाऊद को दूर चरागाह में छोड़ा गया था।

शमूएल दुखी हो गया था! उसने यिशै को आज्ञा दी, ''उसे बुलवा भेज; ज़्योंकि जब तक वह यहां न आए तब तक हम खाने को न बैठेंगे'' (16:11ग)।

संदेश लेकर आने वाले को भागते हुए अपनी ओर आते देख दाऊद के आश्चर्य की कल्पना करें। हांफते हुए उसने कहा, ''दाऊद, दाऊद, तुझे दावत पर बुलाया गया है!''

दाऊद को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। ''लेकिन भेड़ों को कौन सज़्भालेगा?''

''भेड़ों की तू चिंता न कर। उन्हें कुछ नहीं होगा।''[24]

''ठीक है, मैं नहाकर कपड़े बदल लूं तो तुज़्हारे साथ चलता हूं।''

''नहीं, तू *जल्दी* आ। जब तक तू वहां नहीं जाता तब तक कोई खाना खाने को नहीं बैठेगा!''

धूल, और पसीने से भरा दाऊद दावत में पहुंचता है, अभी भी उसके कपड़ों से भेड़ों की गंध आ रही है, चाहे उसके बारे में कोई विशेष बात होने वाली थी। ''उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आंखें सुन्दर, और उसका रूप सुडौल था'' (16:12क)। परन्तु परमेश्वर ने दाऊद के बाहरी रूप को देखकर उसे नहीं चुना था। परमेश्वर ने तो उसका मन देखकर चुना था ज़्योंकि उसने उसे अपने मन के अनुसार एक व्यज़्ति पाया था। तब यहोवा ने शमूएल से कहा, ''उठकर इस का अभिषेक कर: यही है'' (16:12ख)।

शमूएल ने दाऊद को झुककर बैठने को कहा। उसने दाऊद के सिर पर सींग रखा और दाऊद के बिखरे बालों पर सुगंधित तेल उण्डेल दिया जो उसके गालों से होता हुआ उसके कपड़ो और फर्श पर गिरा (16:13क)। जोसेफस कहता है कि शमूएल ने झुककर दाऊद के

कान में कहा, ''अगला राजा तू ही बनने वाला है।''[25] उसने कहा या नहीं, परन्तु दाऊद को पता था कि कुछ विशेष बात हुई है।[26]

''उस दिन से यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा'' (16:13ख)। ज़्योंकि पुराने नियम में पवित्र आत्मा की शिक्षा विकसित नहीं हुई इसलिए यह सज़्भवत: परमेश्वरत्व के तीसरे व्यज़्ति के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर के अपने आत्मा के लिए कहा गया था। इसके बाद परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक विशेष ढंग से रहना था।[27] इसका एक परिणाम दाऊद द्वारा भजनों के लिखने में परमेश्वर की अगुआई होना था (2 शमूएल 23:1, 2)।

आयत 13 ध्यान दिलाती है कि ''शमूएल ने ... उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया।'' सज़्भवत: उसके भाइयों को इस बात की पूरी समझ नहीं होगी कि यह ज़्या हो रहा है। इससे पहले केवल एक बार राजा होने के लिए किसी का अभिषेक किया गया था और वह एक निजी समारोह था (तु. 1 शमूएल 10:1)। परन्तु वे यह जाने बिना रह नहीं पाए कि ''वह कीड़ा'' उनमें से चुना गया था और उसे कोई सज़्मान देने के लिए अलग किया गया था।[28]

अपना काम पूरा करके, शमूएल घर लौट गया (16:13)।

दाऊद ने ज़्या किया? ज़्या उसने मुकुट या शाही कपड़े पहनने शुरू कर दिए? ज़्या उसने अपने नाम के नये कार्ड छपवा लिए: '''चरवाहा' मिटाकर 'राजा' लिख लिया''? ज़्या वह परिवार के रथ को चमकाकर यह शोर मचाते हुए गलियों में उस पर सवार होकर घूमा कि ''मैं तुज़्हारा नया राजा हूं''?[29] नहीं, बल्कि दाऊद अपनी भेड़ों के पास वापस चला गया। जब शाऊल ने बाद में उसे बुलाया तो यिशै को यही संदेश मिला था, ''अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे'' (16:19)। शाऊल के लिए वीणा बजाने को जाने के समय भी, वह ''बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़-बकरियां चराने को शाऊल के पास से आया जाया करता था'' (1 शमूएल 17:15; 1 शमूएल 17:20, 28 भी देखें)।

राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया गया था; वह चुना हुआ राजा था, परन्तु इसके अलावा वह परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यज़्ति भी था। वह परमेश्वर के समय तथा परमेश्वर के स्थान के लिए प्रतीक्षा कर सकता था। वह अपनी भेड़ों के पास वापस चला गया।

इसमें हमें परमेश्वर की प्रतीक्षा अर्थात धीरज रखने का सबक मिलता है। कितना महत्वपूर्ण सबक है; कितना *कठिन* सबक है! आइए हम परमेश्वर द्वारा हमें इस्तेमाल किए जाने के लिए तैयार होकर उसकी प्रतीक्षा करना सीखें।

एक गायक जिसने आराधना करनी सीखी

राजा चुने जाने वाला चरवाहा चरागाह से सिंहासन पर कैसे बैठ गया? साधारणतया, चरवाहा महल के अंदर कभी नहीं झांकता, परन्तु परमेश्वर रहस्यमयी ढंग से उसमें रहता है। अध्याय 16 का अंतिम भाग हमें बताता है कि परमेश्वर ने इसका प्रबन्ध कैसे किया।

एक चरवाहे के रूप में, दाऊद ने अपने अन्दर उन गुणों को विकसित कर लिया था जिनका उल्लेख हमने संक्षेप में किया है अर्थात उसने भेड़ों की रखवाली करते करते गाना और साज़ बजाना सीख लिया था।

भेड़ों की रखवाली कई-कई घण्टे करनी पड़ती थी, जिसमें कभी-कभी तो समय बिताना कठिन हो जाता था। चरागाह में भेड़ों के सुरक्षित होने पर चरवाहे का काम केवल उन्हें किसी पहाड़ी पर बैठकर देखना ही होता था। चरवाहों के लिए किसी साज़ से अपना मनोरंजन करना आम बात थी। अधिकतर चरवाहे बांसुरी आदि का इस्तेमाल करते थे। दाऊद ने तार वाले बाजे को चुना। NASB तथा हिन्दी अनुवाद में ''वीणा'' (16:23) है, परन्तु इसका अच्छा अनुवाद ''lyre'' (वीणा सदृश; देखें RSV) होता, जो कम तारों वाला छोटा साज़ है (इसे वीणा तथा गिटार के बीच का साज़ कहा गया है)।

पथरीली पहाड़ियों पर एकांत में रहने के दौरान, दाऊद ने कविताएं लिखीं और उन्हें संगीत दिया। फिर उसने उन्हें साज़ों के साथ गाया। परमेश्वर ने उसे मधुर गायक और संगीत के गुण की आशीष दी, और दाऊद ने उस गुण को विकसित किया। अध्याय के शेष भाग को पढ़ते समय इस बात को ध्यान में रखें।

आयत 14 आरज़्भ होती है, ''और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया।'' अध्याय 16 का अंतिम भाग दाऊद और शाऊल में अन्तर करता है। प्रभु का आत्मा दाऊद पर यह दिखाने के लिए आया था कि वह अगला राजा बनने के लिए परमेश्वर द्वारा स्वीकृत है (16:13); इसके साथ ही परमेश्वर का आत्मा शाऊल से यह दिखाने के लिए उठा लिया गया कि राजा के रूप में उसका ठुकराया जाना पज़्का है।[30]

परन्तु, फिर हमें एक परेशान करने वाला वाज़्य मिलता है: ''और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे [अर्थात शाऊल को] घबराने लगा'' (16:14ख)। यहां ''दुष्ट'' का अर्थ ''पापपूर्ण'' नहीं बल्कि ''दण्ड देने वाला'' है। पुराने नियम में कई बार दण्ड देने के लिए ''दुष्ट'' शज़्द का इस्तेमाल किया गया है।[31] NKJV में ''दुखित करने वाला आत्मा'' है। ''यहोवा की ओर से'' का अर्थ या तो यह हो सकता है कि परमेश्वर ने शाऊल को दण्ड देने के लिए सीधे इस आत्मा को भेजा था या यह कि परमेश्वर ने शाऊल को सताने के लिए अपने कर्मियों में से एक का इस्तेमाल करने की शैतान को *अनुमति* दी (जैसे अय्यूब के केस में)। दोनों में से जो भी अर्थ हो, परन्तु हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का उद्देश्य भला ही था। शाऊल को परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिए अनुशासित किया जा रहा था।[32]

दुष्ट आत्मा के शाऊल पर आने पर उसके आस-पास का परिणाम स्पष्ट था (16:15)। शाऊल हमेशा ही कुछ डांवांडोल रहा था, परन्तु दुष्टात्मा ने उसके मूड को और पज़्का कर दिया; उसकी निराशा बढ़ती जा रही थी। शाऊल के सलाहकारों ने सुझाव दिया: ''हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे कि वे किसी अच्छे वीणा बजाने वाले को ढूंढ़ ले आएं; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए'' (16:16)। कहते हैं कि ''संगीत से दुखी

हृदय को सकून मिलता है।''[33] शाऊल के समय भी यह बात सत्य थी, और हमारे समय में भी यह सत्य है, चाहे यह किसी व्यापारी द्वारा तनाव को कम करने के लिए पुराना संगीत सुनने या मां द्वारा अपने बच्चे को लोरी देने की बात हो।

शाऊल हिज़्मत हार चुका था और निराशा से उबरने के लिए वह कुछ भी उपाय करने को तैयार था। ''अच्छा, एक उज़्म बजवैया देखो, और उसे मेरे पास लाओ'' (16:17)।

पास खड़ा एक नवयुवक शाऊल की इस बिनती को सुन रहा था, इसकी उम्र दाऊद के जितनी ही थी और वह दाऊद की वीणा बजाने की योग्यता के बारे में जानता था। ज़्या यह अजीब संयोग नहीं है? बेशक, यह संयोग नहीं था, बल्कि परमेश्वर ने, अपने पूर्व प्रबन्ध के अनुसार, एक दीन चरवाहे को महल में लाने के लिए अपनी योजना पर काम करते हुए, उसे राजा बनना सिखाने के लिए ऐसा किया था। उस जवान ने कहा: ''सुन, मैंने बेतलेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा जो वीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साथ रहता है'' (1 शमूएल 16:18)। यह तो बहुत प्रभावित करने वाला परिचय था।[34] शाऊल को लगा कि सबसे महत्वपूर्ण बात इस सूचना में पहली चीज़ है कि वह ''वीणा बजाना जानता है।'' परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण अंतिम वाज़्यांश था कि ''यहोवा उसके साथ रहता है।'' परमेश्वर का आत्मा शाऊल से उठ चुका था और उसे अपने परमेश्वर की आवश्यकता थी।

शाऊल ने तुरन्त दाऊद को बुलवा लिया (16:19)। थोड़ी देर बाद ही रोटी से लदा हुआ गधा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर एक जवान लड़का शाऊल के महल में पहुंच गया (16:20)। उसी समय से वह शाऊल की सेवा करने लगा (16:21)।[35] आयत 23 हमें बताती है कि ''जब-जब परमेश्वर की ओर से आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब-तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था।''

दाऊद की वीणा के बारीक तारों से शाऊल के मन को राहत या सकून तो मिलता था, परन्तु दाऊद के बजाने से शाऊल से दुष्टात्मा चले जाने का ज़्या सज़्बन्ध था? जरा विचार करें। दाऊद कैसे गाने लिखता था? ज़्या वह यह लिखता था, ''यहूदा के मन में ... रात को तारे ... बड़े-बड़े और चमकीले होते हैं''? या ''मेरा रोमांच हकीला के पर्वत पर छिन गया'' (1 शमू. 23:19)? हमारे पास ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है जिससे यह कहा जाए कि दाऊद ने कभी कोई गैर धार्मिक गीत लिखा होगा।[36] इसके विपरीत वह परमेश्वर के लिए और उसके साथ अपने सज़्बन्ध के बारे में लिखता था:

> जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है,
> और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुज़्त किया है,
> देखता हूं; तो फिर मनुष्य ज़्या है कि तू उसका स्मरण रखे, ...
>
> आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है;
> और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। ...

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं,
तौभी हानि से न डरूंगा; ज़्योंकि तू मेरे साथ रहता है; ...
(भजन संहिता 8:3, 4; 19:1; 23:4)।

दाऊद ने चरवाहे के जीवन के अकेलेपन से बहुत सी बातें सीखीं; सज़्भवत: जो सबसे अलग बात उसने सीखी वह परमेश्वर की आराधना करना ही था। खेतों में अकेले रहते हुए, दाऊद परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के संसार के बारे में सोचते-सोचते परमेश्वर का आराधक बन गया था। उसके लिए परमेश्वर की उपस्थिति में आना सांस लेने की तरह ही स्वाभाविक है।

आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता यह सीखना (या फिर से सीखना) है कि हमारे परमेश्वर की आराधना जो सचमुच में आराधना हो, कैसे होनी चाहिए। आराधना के लिए नये नियम की कुछ अभिव्यज़्ति पुराने नियम की बातों जैसी नहीं है (उदाहरण के लिए, नये नियम की कलीसिया दाऊद की तरह आराधना में गाने के लिए वीणा या किसी अन्य साज़ का इस्तेमाल नहीं करती थी), परन्तु आराधना का *आधार* वही है। हमें उसका जिसने सब कुछ बनाया पवित्र भय, उसकी महिमा के सामने दीनता से झुकने, उसकी आज्ञाओं से प्रेम करके उन्हें मानना चाहिए। बहुत से लोग किसी प्रकार की आत्मिक उज़ेजना को भड़काने के लिए अभियान या कैज़्पेन आदि चलाते हैं जबकि हमें ''इस्राएल के मधुर भजन गाने वाले'' (2 शमूएल 23:1) के मन से परमेश्वर के सामने लौटने की आवश्यकता है।

दाऊद के गाने और बजाने से शाऊल में से दुष्टात्मा ज़्यों भाग जाती थी? ज़्योंकि शाऊल की समस्या मन का रोग नहीं बल्कि आत्मा की पीड़ा थी। जब दाऊद परमेश्वर के गीत गाता था तो थोड़े समय के लिए शाऊल का मन परमेश्वर के विचारों से भर जाता था और दुखित करने वाली कोई बात ही नहीं रहती थी।

अगला अध्याय बताता है, ''दाऊद बैतलहम में अपने पिता की भेड़-बकरियां चराने को शाऊल के पास से आया जाया करता था'' (1 शमूएल 17:15)। पहला शमूएल 16:21 कहता है, ''शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा।'' परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के अनुसार, एक दीन चरवाहा राजा का करीबी बन गया उससे देश को चलाने का ढंग सीखा और सज़ा में बैठे लोगों से सज़्मान पाया, जो दाऊद के लिए परमेश्वर की योजनाओं में महत्वपूर्ण कारक थे। ज़्या परमेश्वर के ढंग अजीब नहीं हैं?

सारांश

इस पाठ के आरज़्भ में, मैंने ज़्लोरेंस में दाऊद के बुत देखने की कहानी बताई थी। कहानी है कि मिचलेंजलो को कच्चे संगमरमर का कटा हुआ एक टुकड़ा मिला, जो कैथेड्रल की एक वर्कशॉप में फैंका हुआ था। किसी अनाड़ी मूर्तिकार ने इसका एक भाग तोड़ दिया था। उसने यह सोचकर कि पत्थर खराब हो गया, इसे फैंक दिया था। मिचलेंजलो ने उसी पत्थर की ''टूटी हुई'' साइड को गोल करके बड़ी निपुणता से मूर्ति की पीठ बना दिया। फैंके हुए पत्थर से

मिचलेंजलो ने एक बेहतरीन मूर्ति बनाई और वह मूर्ति *दाऊद* की है।

हो सकता है कि आप मानते हों कि आपका जीवन व्यर्थ और गन्दगी से भरा है, परन्तु ''परमेश्वर के मन के अनुसार'' कभी भी बना जा सकता है। यदि आप दाऊद की तरह अपना मन परमेश्वर को सौंप दें, तो परमेश्वर स्वयं आकर लेकर अपने कोमल और निपुण हाथों से देकर अपनी महिमा के लिए बनाता है।

हम में से हर एक या तो दाऊद की तरह या शाऊल की तरह बन सकता है। परमेश्वर का आत्मा हम पर उतर सकता है, या हमसे उठ सकता है (प्रेरितों 2:38; गलतियों 4:6)। फैसला हमें करना है।

टिप्पणियां

[1]गद्दी पर बैठने के समय दाऊद तीस वर्ष का था (2 शमूएल 5:4)। शाऊल ने चालीस वर्ष शासन किया (प्रेरितों 13:21)। इसका अर्थ यह हुआ कि दाऊद का जन्म शाऊल के शासन के दसवें वर्ष के आस-पास हुआ। इसलिए, 1 शमूएल 13:14 अवश्य ही भविष्यसूचक भूतकाल में लिखा गया होगा, जो भूतकाल में भविष्य की बात करता है, ज़्योंकि जब परमेश्वर कोई बात कहता है तो वह इतनी पज़्की होती है कि इसे ऐसे कहा जा सकता है जैसे पहले ही हो चुका हो। [2]पेरेस की माता का नाम तामार था (उत्पज़ि 38)। [3]1 शमूएल 17:12. बैतलहम के लिए दाऊद के मन में विशेष स्थान था; बाद में वह वहां के कुएं से पीने के लिए तरसता था (2 शमूएल 23:15; 1 इतिहास 11:17)। [4]पहला शमूएल 17:12-14 आठ पुत्रों तथा उनमें दाऊद के सबसे छोटा होने के तथ्य का उल्लेख करता है। 1 इतिहास 2:13-15 में यहूदा की वंशावली में केवल सात पुत्रों का उल्लेख है। शायद उनमें से एक अविवाहित या नि:संतान ही मर गया था। 1 इतिहास 2:16, 17 दो बहनों के बारे में बताता है। [5]''दाऊद'' इब्रानी भाषा के शज़्द *dawidh* (यू.: *dabid*) से लिया गया है। कुछ लोगों का मत है कि दाऊद का नाम उस इब्रानी शज़्द का संक्षिप्त रूप है जिसका अर्थ ''उसका प्रिय'' या ''यहोवा का प्रिय'' है। बाइबल में किसी और का यह नाम नहीं मिलता। [6]इस तथ्य के कि दाऊद को भेड़ों की देखभाल करनी पड़ती थी (खाते-पीते घरों में यह काम नौकरों से करवाया जाता था), अतिरिज़्त और बातें इस बात का संकेत हैं कि यह परिवार निर्धन था: स्पष्टतया जिस झुंड की दाऊद देखभाल करता था, वह छोटा सा ही था (1 शमूएल 17:28)। और शाऊल को भेजा गया उपहार (यदि वही था) तो यह किसी राजा को भेजे जाने लायक उपहार नहीं था (1 शमूएल 16:20)। 1 शमूएल 18:23 भी देखें। [7]लड़कपन में, बड़ों के साथ काम करते हुए मैं अज़्सर ''झण्डा थामने वाला'' ही होता था। गेहूं की कटाई के समय, या अन्य अवसरों पर मुझे भूसा निकालने जैसा छोटा काम करने को दिया जाता था। आप को अपने अनुभव से इससे मिलते-जुलते उदाहरण मिल जाएंगे। [8]इसमें कोई संदेह नहीं कि एक चरवाहे के रूप में बाहर के जीवन से दाऊद का विश्वास बढ़ा और मजबूत हुआ। [9]कई बार चरवाहे मिलकर काम करते थे (तु. 1 शमूएल 25:16; लूका 2:8; आदि), परन्तु कभी-कभी वे अकेले काम करते थे, विशेषकर जब झुंड छोटा हो। [10]मैंने पायलटों को उड़ान भरने के सज़्बन्ध में इन्हीं शज़्दों का इस्तेमाल करते सुना है।

[11]लिन्न एंडर्सन, ''द हार्ट ऑफ़ द मैटर'' (पृष्ठ नहीं, तिथि नहीं), साउंड कैसेट। [12]उसका डर सही निकला जब यह निष्कर्ष निकालकर कि नोब के याजकों ने दाऊद का समर्थन किया है, शाऊल ने उनका कत्ल कर दिया (1 शमूएल 22:6-19)। [13]''पवित्र करना'' का अर्थ ''अलग करना'' है। उन्होंने रीति के अनुसार अपने आप को शुद्ध करना, और बलिदान के लिए अपने मनों और जीवनों को तैयार करना था। [14]ज़्योंकि बलिदान के लिए उनके आने तक शमूएल यिशै के परिवार से नहीं मिला था, इसलिए शमूएल का यिशै और उसके पुत्रों को ''पवित्र करना'' तथा निमन्त्रण (1 शमूएल 16:5) अधिकारियों के माध्यम से ही होगा। [15]1 शमूएल 17:13

पर ध्यान दें, जिसमें बताया गया है कि अबीनादाब और शज़्मा दूसरे और तीसरे नज़्बर के थे। [16]1 शमूएल 16:7 पर ध्यान दें ''उसके डील-डौल की ऊंचाई,'' और ''बाहर का रूप [मूलत:, ''आंखें/मुंह''] ।'' [17]रिक ऐचले, ''हेयर कज़्स द जज'' (पृष्ठ नहीं, तिथि नहीं), साउंड कैसेट। [18]कुछ लोग मज़ी 7:1 का हवाला देते और निष्कर्ष निकालते हैं कि मसीही लोगों को कभी न्याय नहीं करना चाहिए। मज़ी 7:1-5 सब प्रकार के मानवीय न्याय के विरुद्ध रोक *नहीं* (अगली आयत अर्थात आयत 6 पर ध्यान दें, जिसका अभिप्राय न्याय से है) है। परन्तु, मज़ी 7:1 से, शमूएल द्वारा मुंह देखकर न्याय करने के विपरीत है। यह कठोर न्याय करने के भी विरुद्ध है। [19]कुछ लोगों का मत है कि दाऊद किसी अच्छी वस्तु के बहुत अधिक हो जाना था। यिशै के पहले ही सात लड़कों (यहूदी लोग सात को सज़्पूर्ण अंक मानते थे) के साथ दो लड़कियां काफी थीं। दाऊद को ''अनापेक्षित आशीष'' ही माना जाता होगा।। [20]दाऊद के पूर्वजों में मोआबी रूत आदि शामिल थे।

[21]आप मेज़ के इर्द-गिर्द सात बड़े लड़कों द्वारा अपने पिता से उनकी शेखियां सुनने और फिर दाऊद के यह कहने कि ''आज मैंने एक कविता लिखी है'' की तस्वीर बना सकते हैं। [22]भजन संहिता 16:10 का अनुवाद ''यदि मेरा पिता और मेरे भाई मुझे छोड़ दें ...'' हो सकता है, परन्तु मेरा प्रश्न वही है। एक ऐसे परिवार में पलने के कारण जहां माता-पिता दोनों ने बहुत प्रेम दिया हो, मैं उनके द्वारा मुझे छोड़ देने की सज़्भावना की बात कहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। [23]यह भी सज़्भव है कि दाऊद के जन्म के आस पास कोई दाग हो। [24]भेड़ों को कभी-कभी अकेले ही छोड़ दिया जाता था (तु. लूका 2:16; 15:4)। [25]पहली शताज़्दी के इतिहासकार जोसेफस ने लिखा है, ''... उसने [अर्थात शमूएल ने] दाऊद के सामने तेल लिया, और उसका अभिषेक कर दिया और उसके कान में कुछ कहा, और उसे समझा दिया कि परमेश्वर ने उसे उनका अगला राजा होने के लिए चुना है; और उसे धर्मी बनने की शिक्षा दी, ...'' जोसेफस, *एंटीज़्क्विटीस* 6.8.1 (61-65)। [26]शायद दाऊद पर आत्मा उतरने के समय परमेश्वर की योजना उस पर प्रकट हो गई थी। [27]शिमशोन (न्यायियों 14:6, 19; 15:14), शाऊल (1 शमूएल 10:6, 10; 11:6) और अन्य कई न्यायियों के बारे में ऐसी ही बात कही गई है। ''उस दिन से'' वाज़्यांश का संकेत हो सकता है कि दूसरे दिनों की अपेक्षा दाऊद पर परमेश्वर के आत्मा के अधिक स्थाई ढंग से आने के दिन से। [28]इसमें कोई संदेह नहीं कि क्रोध से उनके मन जलते होंगे (1 शमूएल 17:28)। [29]ये उदाहरण कई स्रोतों से लिए गए हैं। [30]शमूएल द्वारा शाऊल को राजा के रूप में अभिषेक करने के बाद (1 शमूएल 10:1), परमेश्वर का आत्मा उस पर उतर आया (1 शमूएल 10:10 से)।

[31]यही इब्रानी शज़्द योएल 2:13 में इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ परमेश्वर का दुष्टों को दण्ड देना है। इस शज़्द का इस्तेमाल योना 3:10 में भी किया गया है जिसका अननुवाद हिन्दी में ''कुमार्ग'' हुआ है। [32]इब्रानियों 12:5-11 भी देखें। शाऊल को राजा के रूप में तो रद्द किया गया हो सकता है, परन्तु उसकी आत्मा भी थी जिसका उद्धार होना आवश्यक था। [33]विलियम कौंग्रीव, *बार्टलेट'स फेमिलियर कुटेशन्स,* 14वां संस्क. (बोस्टन: लिटल, ब्राउन एण्ड ब्राउन कं., 1968), 391 में उद्धृत। [34]अध्याय 16 के अन्त के सज़्बन्ध में कालक्रम की कुछ समस्याएं हैं। हमें अध्याय 16 के अन्त को शाऊल और दाऊद के पहले सज़्बन्ध के विषय में परिचय देने वाले वाज़्य के रूप में विचार करना चाहिए जिसका विवरण अगले कुछ अध्यायों में है। यदि ऐसा है, तो इसका कुछ दृश्य अध्याय 17 में गोलियत के साथ युद्ध के *बाद* घटे, और ''शूरवीर'' और ''योद्धा'' शज़्दों का अर्थ एक सिपाही के रूप में दाऊद की बढ़ रही प्रतिष्ठा के लिए ही था। परन्तु यदि यह दाऊद के गोलियत को पराजित करने से *पहले* हुआ, तो ''शूरवीर'' और ''योद्धा'' का अर्थ है कि अपनी भेड़ों पर जंगली जानवरों और चोरों से लड़ने की दाऊद की बहादुरी को सब लोग जान गए थे। [35]पहला शमूएल 16:21, 22 शाऊल द्वारा दाऊद को अपने साथ ''हथियार ढोने वाले'' के रूप में लाने के बारे में बताता है। यह 1 शमूएल 18:2 का पूर्वानुमान लगता है। [36]कुछ लोगों का कहना है कि 2 शमूएल 1 में योनातन और शाऊल पर दाऊद का विलाप एक ''सेज़्यूलर'' कविता है ज़्योंकि इसमें परमेश्वर का उल्लेख नहीं है। परन्तु एस्तेर की पुस्तक में परमेश्वर के नाम का उल्लेख नहीं है, और वह पुस्तक तो किसी भी तरह से ''सेज़्यूलर'' नहीं है।